:पंचम अध्याय:

: पंचम अध्याय :

कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं की विभिन्न समस्याएँ

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक नायिकाओं का स्वरूप परिवर्तित होता आया है। इसी वजह से नायिकाएँ जैसे परिवर्तित होती गयी वैसे ही उनकी समस्याएँ भी परिवर्तित होती गयी है। प्राचीन काल में नायिकाएँ भारतीय संस्कृति की परम्परा के अनुसार चार दीवारी में कैद थी, उसे मात्र उपभोग का साधन माना जाता था। परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाना, पति की सेवा करना यही उसका कार्य माना जाता था। इसी वजह से वह शिक्षा से वंचित थी। उसे किसी भी प्रकार के अधिकार नहीं थे। उसकी किसी भी बात को, उसके सुझावों को महत्त्वपूर्ण नहीं माना जाता था। अशिक्षा, अज्ञानी, रूढ़ी-परम्पराओं से युक्त अंधविश्वासी, अधिकारों से वंचित आदि कई तरह की समस्याएँ इन नायिकाओं की थी।

स्थितियाँ परिवर्तित होती गयी है। स्वातंत्र्योत्तर काल में स्त्री को शिक्षा मिलने लगी है। इसी वजह से अपने अधिकारों के प्रति उसमें जागृति आने लगी है। उसका सामाजिक स्तर भी बढ़ने लगा है। जिन क्षेत्रों में अब तक पुरुषों का वर्चस्व था, उनका एक छत्र अधिकार था, अब उन क्षेत्रों में भी स्त्रियाँ काम करने लगी हैं। इन सभी का प्रभाव तत्कालीन साहित्यकारों पर पड़ा और उनकी नायिकाओं का स्वरूप बदल गया है। इससे पहले जो नायिकाएँ घरेलु स्तर का विचार किया करती थी, अब उनमें भी परिवर्तन आ गया है। उनमें वैचारिकता आने लगी है। सिर्फ घरों में कैद नायिकाओं की अब खुले में आयी नायिकाओं का चित्रण होने लगा।

जैसे ही पाश्चात्य विचारों का प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा नायिकाओं के स्वभाव में भी परिवर्तन आया है। पाश्चात्य विचारों से प्रभावित नायिकाएँ नायिकाओं की प्राचीन जमीन तोड़ने लगी है और विद्रोह करने लगी है। उनका विद्रोह सिर्फ उनके परिवार तक ही सिमित नहीं रहा वे पूरा समाज में क्रांति लाना चाहती हैं। अब तक वे अन्याय सहती आयी हैं अब अन्याय का पूरा प्रतिकार करना चाहती है।ऐसी नायिकाओं के कारण कथानक को भी नया मोड़ मिलने लगा है। नये रूप में साहित्य सृजन होने लगा है।

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में नायिकाओं के स्वरूप में परिवर्तन प्रेमचंद के साहित्य से हुआ। प्रेमचंद ने नायिकाओं के सिर्फ स्वरूप में ही परिवर्तन नहीं किया तो उनकी अलग-अलग समस्याओं से लोगों में जागृति लाने का कार्य भी किया। इसी वजह से साहित्यकारों का ध्यान इन नायिकाओं की ओर गया और उन्होंने भी इसी प्रकार से नायिकाओं की समस्याओं को मुखरित किया।

कहानीकार के नाते जाने गये कमलेश्वरजी ने उपन्यास साहित्य भी लिखा। उनके उपन्यासों की विशेषता यह है कि उन्होंने अधिकतर उपन्यास फिल्माये जाने योग्य ही लिखे हैं। उनके चार उपन्यास फिल्माये भी गये हैं। कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यासों में जिन नायिकाओं का चित्रण किया है, उनमें कोई राजनीतिज्ञ है, तो कोई वेश्या है, कोई घरेलु स्त्री है, तो कोई कामकाजी महिला है, तो कोई बुढ़ी है, तो कोई युवा है। इन उपन्यासों में से `लौटे हुए, मुसाफिर` और `रेगिस्तान` इन दोनों उपन्यासों में तो कोई नायिका ही नहीं है। उनमें चित्रित नायिकाओं की समस्याएँ हम देखेंगे।

परिवार विघटन की समस्या :

आधुनिक काल में यह समस्या औद्योगीकरण के बढ़ने के साथ ही बढ़ने लगी है। स्त्री पुरुष सम्बन्धों में कहीं-न-कहीं तनाव आता है और परिवार टुटते चले जाते हैं। कमलेश्वरजी के उपन्यास `डाक बंगला` की नायिका इरा और उसका पति विमल इन दोनों के बीच में शक की दीवार खड़ी हो जाती है और इसी वजह से उन दोनों के सम्बन्धो में बिखराव आ जाता है। विमल उसे छोड़कर चला जाता है।

यही शक की दीवार `तीसरा आदमी` की नायिका चित्रा के जीवन को भी त्रस्त कर देता है इस उपन्यास का उद्देश्य ही पति-पत्नी सम्बन्धों में जब विश्वास की नींव खोखली बन जाती है तो उसके सम्बन्ध कैसे बिखरने लगते हैं, इस समस्या का चित्रण करना है। इसके लिए चित्रा एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में काम करती है। चित्रा को नरेश शादी के बाद नौकरी के कारण दिल्ली ले आता है। शादी के बाद उसे दिल्ली में अपने भाई सुमंत की बहुत सहाय्यता लेनी पड़ती है। दुर्भाग्यवश उन्हें उसी के कमरे में रहना पड़ता है। आरंभ में तो नरेश को इस बात का एहसास नहीं होता, परंतु बाद में उसे लगने लगता है कि सुमंत रूपी एक छाया उन दोनों के बीच

मँडराने लगी है। चित्रा उसे सुमंत के बीच पहले से ही एक खुला वातावरण है, इसी वजह से वे दोनों खुले रूप से बातचीत कर लेते हैं। यही बात नरेश बर्दाश्त नहीं कर पाता। पहले तो चित्रा हर एक बात की सफाई देती है परंतु बाद में वह भी छोड़ देती है। जब भी नरेश दौरे पर चला जाता है तब-तब वापस आनेपर वह यह महसुस करता है कि उसके और चित्रा के बीच और ज्यादा तनाव बढ़ गया है।

पति के शक के कारण चित्रा पति के सामने खुल नहीं पाती जितनी सुमंत के सामने खुलती है। उसका पति नरेश यही बात बर्दाश्त नहीं कर पाता और वह उसे छोड़कर चला जाता है।

कमलेश्वरजी के महत्वपूर्ण उपन्यास `काली आँधी' की नायिका मालती का परिवार विघटन, पति के शक के कारण नहीं होता। मालती एक सफल राजनीतिज्ञ के रूप में हमारे सामने आती है। पहली बार जब वह अपने पति जग्गीबाबू के प्रोत्साहन पर चुनाव के लिए खड़ी रहती है और सफलता प्राप्त करती है तो उसे अपने पति का होटल चलना जँचता नहीं है। उसे लगता है कि उसकी इमेज खराब हो रही है वह अपने पति को होटल बद करने की सलाह देती है। इसी वजह से उन दोनों में संघर्ष बढ़ता है। स्वाभिमानी जग्गीबाबू मालती को त्यागकर अपनी बेटी लीली को लेकर चले जाते हैं।प्रभा वर्मा जी ने इस उपन्यास के संदर्भ में जो कुछ लिखा है, वह सार्थक प्रतित होता है - ``काली आँधी' की मालती का पारिवारिक विघटन इन्हीं परिस्थितियों पर आधारित है। मालती के के राजनैतिक जीवन में प्रवेश करते ही पति जग्गी बाबू के साथ उसके सम्बन्ध तनावपूर्ण हो उठते हैं। मालती राजनीति में सफलता पाने के लिए विवाह जैसे पूनित सम्बन्ध को भी नकार देती है। वह पति से मिलने भी तभी जाती है, जब उसे कोई राजनैतिक कार्य हो। आरोपों प्रत्यारोपों में दोनों का जीवन विडम्बनापूर्ण हो उठता है।''[1]

प्रभा वर्माजी के द्‌वारा कहीं बातें हम उपन्यास के अंत में सही साबित होती देखते हैं। जब वह अपने पति का प्रयोग राजनैतिक हथकंड्रो के रूप में करते हुए अपनी बिगड़ती हुई पब्लीक इमेज बना लेती है और चुनाव जीत जाती है।

कमलेश्वर के `सुबह दोपहर शाम' उपन्यास की बड़ी दादी के परिवार का विघटन एक अन्य

कारण से होता है। इस उपन्यास की बड़ी दादी अंग्रेजों की विरोधक है और अंग्रेजों के खुन का बदला खुन से लेने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है। जब कि उसी का पोता अंग्रेजों के द्वारा चलायी जानेवाली रेल पर काम करने जाता है। यह देखकर व्यथित दादी घर छोड़कर चली जाती है। इसी वजह से पूरा परिवार बिखर जाता है।

इस प्रकार कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यास की नायिकाओं के माध्यम से परिवार विघटन की समस्या का अंकन कर उसके भयानक परिणामों का विवेचन भी किया है।

अनमेल विवाह :-

चाहे शारिरीक दृष्टि से हो, चाहे आर्थिक दृष्टि से हो चाहे आयु की दृष्टि से हो, चाहे स्वभाव की दृष्टि से हो जहाँ पति-पत्नी इन दोनों में इनमें से किसी एक प्रकार से मेल न हो तो उसे अनमेल विवाह कहा जाता है। यह प्रथा भारत में सदियों से चली आयी है। प्राचीन काल में जबरदस्ती इस प्रकार के विवाह किये जाते रहे परंतु आधुनिक काल में भी इस प्रकार के विवाह होते हैं यह देखकर आश्चर्य होता है। कमलेश्वर के उपन्यास `डाक बंगला` की नायिका इरा को जब विमल ओर बतरा दोनों ही त्याग देते हैं तो पेट पालने के लिए डाक्टर चंद्रमोहन जैसे अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ ब्याह कर लेती है। जो दो बच्चों का बाप है। उसे डाक्टर से वह प्यार भी नहीं मिलता जो उसे विमल और बतरा से मिल जाता है। वह डाक्टर से घृणा करती है फिर भी मजबुर होकर उसके साथ रहती है।

इस प्रकार हम यह देखते है कि अत्यंत सुंदर और कम उम्र की इरा मजबुर होकर अधेड़ उम्र के डॉक्टर के साथ अनमेल विवाह कर अत्यंत दु:खी होती है।

असफल प्रेम :

कमलेश्वर के `एक सड़क सत्तावन गलियाँ` उपन्यास की नायिका बंसिरी है। वह अत्यंत सुंदर है, इसी कारण सबको आकर्षित करती है। वह लारी ड्राईवर सरनाम सिंह से प्यार करती है। इसी वजह से वह डकैती के मामले में सरनामसिंह की शिनाख्त नहीं करती। दो साल बाद जब वे दोनों फिर नौटंकी में मिलते हैं तो बंसिरी गंदे मजाक करना, कुल्हे मटकाना आँख मारना सीख जाती है। यहाँ सरनामसिंह ने उसे जो वादा किया

है कि मेला उठने के एक दिन पहले वह आकर उसे ले जायेगा, उसे वह निभा नहीं पाता है क्योंकि ठर्रे की बोतले पकड़ी जाने के कारण वह पकड़ा जाता है। फिर वह उसे मिल नहीं पाता इसी वजह से विवश होकर उसे नौटंकी में काम करना पड़ता है। उसकी स्थिति इतनी बिगड़ जाती है कि उसे गेंदा कवि 500 रुपये में बेच देता है। दुर्भाग्यवश पहचानी न जाने के कारण स्वंय सरनाम सिंह ही उसे अपने दोस्त रंगिले के लिए खरीद लेता है, अर्थात एक बार असफल हुए प्रेम के कारण उसे कई यातनाओं से गुजरना पड़ता है।

कमलेश्वर का उपन्यास `वही बात` में असफल प्रेम का एक अलग रूप देखने को मिलता है। इस उपन्यास की नायिका पति की व्यस्तता से उब जाती है और उसी के असिस्टेण्ट से प्यार करने लगती है। वह उसके लिए पति को भी छोड़ देती है। लेकिन जब वह भी व्यस्त रहने लगता है, उसकी उपेक्षा करता है तो उसका प्यार असफल हो जाता है। इसी बात को एक अलग ढंग से कमलेश्वर ने `तीसरा आदमी` में दिखाया है। जिसकी नायिका चित्रा सुमंत के प्रति आकर्षित है यह देखकर उसका पति उसे छोड़कर चला जाता है। वह सुमंत के साथ रहने लगती है परंतु वह आत्महत्या कर लेता है। यहाँ चित्रा का भी प्यार असफल हो जाता है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि कमलेश्वर ने असफल प्रेम की समस्या के कारणों का विवेचन अत्यंत स्पष्टता के साथ किया है।

अकेलापन :

कमलेश्वरजी ने अकेलेपन की समस्या को दिखाकर यह दिखाने की कोशिश की है कि अकेलेपन का प्रभाव व्यक्ति के मानसपर पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति गलत कृत्य करता है तो कभी भ्रम में पड़ जाता है। अर्थात अकेलेपन की समस्या के दुष्परिणामों को भी कमलेश्वरजीने इन नायिकाओं के माध्यम से प्रकट किया है।

कमलेश्वरजी का उपन्यास `डाक बंगला` पूरी तरह से इसी समस्या को प्रदर्शित करनेवाला है। इस उपन्यास की नायिका इरा को आजीवन यही समस्या त्रस्त करती है।इरा विमल के लिए घरवालों को त्याग देती है। लेकिन जब वह नौकरी करने लगती है तो विमल शक के कारण उसे छोड़कर चला जाता है और वह

अकेलेपन से बचने के लिए बतरा के यही जहाँ वह नौकरी करती है, रहने लगती है। लेकिन वह भी उसे घर से निकाल देता है तो फिर वह अकेली हो जाती है। इसी समस्या के कारण अधेड़ उम्र के डाक्टर चंद्रमोहन से शादी कर तो लेती है जो दो बच्चों का बाप है।परंतु उसकी मौत के बाद फिर एक बार वह अकेली रह जाती है। फिर उसके जीवन में सोलंकी तिलक आदि आ जाते हैं फिर भी वह अंत में अकेली ही रह जाती है। इस प्रकार इस अकेलेपन से बचने के लिए इरा बहुत कुछ करती है परंतु अंत तक वह अकेली ही रह जाती है।

इसी प्रकार `तीसरा आदमी` की नायिका चित्रा अकेलेपन से बचने के लिए सुमंत से बातचीत कर लेती है, यही बात उसके पति नरेश को पसंद नहीं आती वह उसपर शक करने लगता है। यहाँ तक कि उसक पति उसे छोड़कर चला जाता है। अर्थात जहाँ अकेलेपन की समस्या से बचने के लिए जो कुछ चित्रा करती है, वहीं उसके परिवार विघटन का कारण बन जाता है। यही बात समीरा पर भी लागु होती है, जो `वही बात` की नायिका है। वह भी पति की व्यस्तता के कारण उसके असिस्टंट से प्यार करती है पति को छोड़कर उसके साथ रहने लगती है तो फिर उसी अकेलेपन की समस्या का सामना उसे करना पड़ता है।

इस प्रकार हम यह देखते है कि कमलेश्वरजी ने सिर्फ अकेलेपन की समस्या को चित्रण ही नहीं किया है तो उसके परिणामों का भी यथार्थ अंकन अपने उपन्यासों में किया है।

बुजूर्गों की उपेक्षा :

कमलेश्वर के सुबह-दोपहर-शाम का केंद्र बडी दादी है। जब इस दादी का पोता रेल चलाने जाता है, तो वह अचरज में पड़ जाती है। वह अत्यंत साहसी है, अद्भूत है। सन् 57 के खून का बदला खून से लेने की समस्या का अंकन बड़ी दादी के माध्यम से किया गया है। जो व्यक्तिगत समस्या नहीं है। उसके वनदेवी बन जाने में और उसकी मृत्यु में भी कोई समस्या नहीं है। सिर्फ समस्या है पारिवारिक उपेक्षा की। उसकी इतनी बड़ी प्रतिज्ञा (खुन का बदला खून) की सभी उपेक्षा ही करते हैं। आम तौर पर आधूनिक काल में बुढ़े व्यक्तियों की जो उपेक्षा होती है उसी का चित्रण लेखक ने यहाँ किया है। दादी के मरने के बाद उसकी प्रतिज्ञा तो पूरी होती है परंतु वह भी शांता के द्वारा। इस प्रकार हम देखते है कि `सुबह-दोपहर-शाम` की प्रमुख पात्र बड़ी दादी की

सबसे प्रमुख समस्या उपेक्षा है।

झुठी प्रतिष्ठा की समस्या :

आधुनिक काल में लगभग सभी इसी समस्या से ग्रस्त है। हर कोई अपने आप को बड़ा व्यक्ति साबित करने पर तुला है। इसके लिए कितने भी नकाब उसे क्यों न ओढ़ने पड़े। झुठी प्रतिष्ठा के लिए मनुष्य कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। कमलेश्वरजी के `काली आँधी` नामक उपन्यास की नायिका मालती पहले पति के प्रोत्साहन पर चुनाव के लिए खड़ी हो जाती है लेकिन जैसे ही वह चुनाव जीत जाती है तो उसे पति का होटल बिजनेस उसकी इमेज खराब करनेवाला लगने लगता है। इसी वजह से उनमें संघर्ष होता है और झुठी प्रतिष्ठा के लिए मालती अपने पति और बेटी दोनों को छोड़कर जाती है। संतान से दूरावा उसे अपने अकेलेपन में बहुत सताता है। लेकिन बाद में तो वह अपनी बेटी को पहचान भी नहीं पाती। पूँजीवादी व्यवस्था की गलत महत्वाकांक्षाओं की समस्या में वह डुबती चली जाती है। वह शोषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाली बन जाती है। उसका चरित्र पूँजीवादी समाज व्यवस्था की उपज है। डा. एच. जी. साळुंखे लिखते है - ``इस उपन्यास की नायिका दवारा नारी जीवन की किसी समस्या का उद्घाटन नहीं हुआ है, और न इस उपन्यास का वह उद्देश्य है।``[2]

लेकिन हमें ऐसा लगता है कि जो उपन्यास नारी को केंद्र में रखकर लिखा गया है। और पारिवारिक विघटन जिस उपन्यास का केंद्र बिंदू है जिसके लिए नारी ही स्वयं मुल कारण रही है, उस उपन्यास में कोई नारी से सम्बन्धित समस्या नहीं है। ऐसा कहना धृष्ठता होगी। इस झुठी प्रतिष्ठा की भुख की वजह से मालती को जो अपने परिवार से अलग होना पड़ता है। इस बात के बारे में मालती कभी नहीं सोचती है, परंतु जब वह अकेली होती है तो उसे यह वियोग दु:खदायक लगता है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि झुठी प्रतिष्ठा के कारण मालती को पारिवारिक सुख, शांति आदि बातों को त्याग देना पड़ता है। झुठी प्रतिष्ठा के बदले वह अकेलेपन का गम मोल लेती है।

नैतिक मुल्यों का पतन :

समाज के द्वारा, समाज में रहने के लिए कुछ नीतिनियम बनाये गये हैं। इन नियमों का पालन जो भी करता है उसे सदगृहस्थ कहा जाता है। जो उसका पालन नहीं करता उसे पतीत कहा जाता है। उसके द्वारा किये गये इन कार्य के कारण समाज में अनाचार फैलता है, इसी कारण वह एक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में सामने आती है। कमलेश्वरजी ने भी अपनी कुछ नायिकाओं के माध्यम से इस समस्या को प्रस्तुत किया है।

कमलेश्वरजी के उपन्यास `तीसरा आदमी' की नायिका चित्रा पहले तो एक गृहिणी के रूप में हमारे सामने आ जाती है और जब अकेलेपन से बचने के लिए चित्रा सुमंत के साथ खुलने लगती है तो वही नैतिक मुल्यों में गिरावट आने लगती है। स्वाभाविक रूप में पति उस पर शक करता है और उसे त्याग देता है।

यही बात समीरा के संदर्भ में दिखाई देती है वह भी अकेलेपन की समस्या से बचने के लिए पति के असिस्टेण्ट के साथ प्यार कर लेती है। पति के होते हुए भी केवल उसकी व्यस्तता के बहाने किसी दूसरे व्यक्ति से प्यार करना, उसी के साथ रहना उसकी नैतिकता को गिरा देता है।

भारतीय समाज में शादी से पहले शारिरीक सम्बन्धों को पाप माना जाता है। लेकिन कमलेश्वर के `समुद्र में खोया हुआ आदमी' की तारा का नैतिक स्तर इतना गिर चूका है कि वह इसी समस्या से ग्रस्त है। तारा उपन्यास के नायक शामलाल की बेटी है। वह पिता के साथ ही नौकरी करती है लेकिन उसकी विवशता का फायदा उठाकर हरवंश, जो उनका मालीक है, उनके घर आना-जाना शुरू कर देता है। तारा और उसकी हरवंश की चाल समझ में नहीं आती है। हरवंश तारा को अपने प्रेम जाल में फँसा लेता है और वह उसे समर्पित हो जाती है। तारा गर्भवती हो जाती है। आधुनिक काल में नैतिक मुल्यों का इतना पतन हो चुका है कि तारा अपने पड़ोसन से गर्भ गिराने का उपाय पूछ लेती है। अर्थात् अब इसमें कुछ गलत है, ऐसा नहीं माना जाता।

इस प्रकार कमलेश्वरजी ने अपनी नायिकाओं के माध्यम से नैतिक मुल्य आज गिर गये और उसके भयानक परिणाम सामने आने लगे है, इस यथार्थता का पर्दाफाश किया है।

कुँआरी माता समस्या :

प्राचीन काल से ही इस समस्या पर काफी विचार किया जाता रहा है। सबसे पहली कुँआरी माता कुँती को माना जाता है। तब से लेकर आज तक यह समस्या समाज में पनप रही है। कमलेश्वरजी का उपन्यास `समुद्र में खोया हुआ आदमी' की तारा इसी समस्या से ग्रस्त है। हरवंश उसे नौकरी के लालच में फँसाता है। तारा अपने पड़ोसन से गर्भ गिराने का उपाय पूछ लेती है। और नरखा मिलते ही शांत हो जाती है। डा. कुसुम अंसल ने तारा के बारे में लिखा है -``कमलेश्वर के उपन्यास `समुद्र में खोया हुआ आदमी' के शामलाल की बेटी तारा हरवंश की दूकानपर काम करती है। सिर्फ काम ही नहीं करती वह हरवंश के अवैध बच्चे की माँ भी बननेवाली है। माता-पिता देखते रहते हैं। आर्थिक मजबुरियाँ हाथ बाँधे है। उन्हें लगता है, चूँकि रिश्तों को नाम नहीं दिया जा सकता, बाप-बेटी या माँ-बेटी अब भी बाप -बेटी और माँ-बेटी ही कहे जायेंगे, पर उनके बीच से कोई चीज अनजाने ही खो गयी थी। हकों में कहीं बडा फर्क आ गया था। लडकियाँ लडकियाँ ही थी पर वे न तो पराई सम्पत्ति रह गयी थी और न घर का वासन पता नहीं उनमें कहाँ क्या उपज आया था, जो पहले नहीं था।''[3]

अर्थात इतनी बड़ी समस्या की ओर आर्थिक कारणों की वजह से माता-पिता भी दूर्लक्ष कर देते हैं।

समाज की एक बहुत बड़ी समस्या का अंकन कमलेश्वरजी ने यहाँ तारा के माध्यम से किया है जिस पर अभी तक कोई उपाय ढुँढा नहीं गया है।

पुरूष की वासना का शिकार नारी :

प्राचीन काल से ही पुरूष नारी को अपनी वासनातृप्ति का साधन मानते आये हैं। उसे किसी भी प्रकार के अधिकार न देकर कभी उसे खुश कर तो कभी उसपर जबरदस्ती कर पुरूष अपनी वासना को बुझाता आया है और नारी भी उसका शिकार होती आयी है। इसी समस्या का यथार्थ अंकन कमलेश्वरजी ने भी अपनी नायिकाओं के माध्यमसे किया है।

कमलेश्वरजी के `एक सड़क सत्तावन गलियाँ' उपन्यास की नायिका बंसिरी के घर एक दिन

उपन्यास का नायक सरनाम और अन्य डाकू लुट-पाट करने आ जाते हैं। वहाँ डाकु बंसिरी पर जबरदस्ती करना चाहते है। वहाँ सरनाम बंसिरी को सरनाम बचा लेता है। परंतु स्त्री को पुरूष खिलौना मानता है, जब चाहे उसका इस्तेमाल करना चाहता है, इसी यथार्थ स्थिति का अंकन कमलेश्वर ने इस माध्यम से किया है।

कमलेश्वरजी के `अगामी अतीत` उपन्यास की चाँदनी की स्थिति तो इससे भी बदतर है। जब उसकी माँ चंदा पागलखाने में मरती है तो माँ की लाश के सामने सजा से बचने के लिए पागल बना हुआ बाबुलाल नामक आदमी बेटी, बेटी कहकर चाँदनी पर बलात्कार कर लेता है। चाँदनी बेहोश हो जाती है। इसी का परिणाम पूरी उम्र भर उसे भुगतना पड़ता है।

अर्थात यहाँ भी नारी पुरूष की वासना का शिकार बनी हुई ही दिखाई देती है। पागल न होकर भी पागलों के बीच रहनेवाला खुनी अपनी वासना बुझाने के लिए का इस्तेमाल करता है। सदियों से नारी इसी समस्या से ग्रस्त रही हैं, जिसका कोई समाधान अब तक नहीं निकला है।

वेश्या समस्या :

जब कोई स्त्री किसी पुरूष की वासना का शिकार बन जाती है तो अपनी इज्जत लुटी गयी यह देखकर वह स्त्री या तो आत्महत्या करती है या फिर उसे वेश्या बनकर जीवन बीताना पड़ता है। समाज का उसकी तरफ देखने का नजरिया ही बदल जाता है।

कमलेश्वर के `एक सड़क सत्तावन गलियाँ` की नायिका बंसिरी भी इसी समस्या से ग्रस्त है। आर्थाभाव के कारण बंसिरी नौटंकी में काम करने लगती है। उसका प्रेमी लारी ड्राईवर सरनाम बंसिरी को यह वादा करता है कि मेला उठने से पहले एक दिन आकर वह उसे ले जायेगा। लेकिन अचानक ठर्रे की बोतलें पकड़ी जाने के कारण सरनाम पकड़ा जाता है और उसे जमानत जल्दी नहीं मिलती। फिर कितनी ही कोशिश के बावजुद वह मिल नहीं पाता। परिस्थिती से लाचार बंसिरी बाजारू बन जाती है, कलंकित हो जाती है। यहाँ तक कि गेंदा कवि उसे 500 रूपये में एक बार उसका सौदा करता है। पहचाने न जाने के कारण सरनाम ही उसे अपने मित्र रंगिले के लिए खरीद लेता है, जिस बात का उसे हमेशा दुख होता है।आज भी समाज में स्त्री को क्रय की

वस्तु माना जाता है, उसे बेचा जाता है, उसे वेश्या जीवन बिताने पर मजबुर किया जाता है। सदियों से चली आयी इस बात का रूप बदल गया है। जब सरनाम उसे खरीद लेता है तो सौ रूपये कम होने के कारण वह गेंदा कवि को ही उसे रखने के लिए कहता है। स्त्री की लाचारी यहाँ प्रकट हो जाती है। डा. एच. जी. सालुंखे ने बंसिरी के बारे में अपना मत प्रकट किया है - ``अवहेलना, अपमान और दूख सहन करनेवाली बंसिरी एक ऐसी नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जिस वर्ग की नारियों को जीने के लिए शरीर का सौदा करना पडता है। परिस्थितिवश बंसिरी को भी शरीर का सौदा करना पडा।``[4]

डा. सालुंखेजी ने यहाँ बंसिरी के माध्यम से लेखक ने वेश्या समस्या की ओर कैसे पाठकों का ध्यान दिलाया है, इस बात का विश्लेषण किया है।

कमलेश्वर के `आगामी अतीत` की नायिका चाँदनी पर माँ की मौत के समय पागलखाने में एक पागल बना हुआ खूनी बलात्कार कर लेता है। इसी कारण मजबुरन चाँदनी को वेश्या बनना पड़ता है। वह सोचती है कि अगर उसकी माँ होती तो शायद यह नहीं होता वह कमलबाबु से कहती है - ``मैं किसे बताती कि मेरे साथ क्या हुआ था? अब तो अम्मा भी नहीं थी। उसके बाद मेरे सामने क्या रास्ता रह गया था? सिवा इसके कि कोठे पर बैठ जाऊँ कोई नहीं होता, कहीं कोई अपना होता तो शायद ठाँक-तोप कर मेरी जिंदगी को रास्तेपर ला देता।``[5] अर्थात यहाँ चाँदनी की विवशता का पता हमें चलता है। वेश्या जीवन की सच्चाई और नारी की त्रासदी चाँदनी की वाणी से प्रकट हो जाती है। डा. एच.जी. सालुंखे ने चाँदनी के चरित्र के बारे में लिखा है - ``जीवन अगर जहर है तो उसे पीने की शक्ति चाँदनी में है। उसकी जीवन में श्रद्धा है वह स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर नारी है। उसने आपतियों का मुकाबला पूरी शक्ति लगाकर किया। उसमें प्रबल आशावाद है।``[6]

चाँदनी के जीवन का यथार्थ चित्रण उपर्युक्त पंक्तियों से प्रकट हो जाता है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि कमलेश्वरजी ने वेश्या जीवन की प्रचंड विभिषिका का वर्णन इन दो नायिकाओं के माध्यम से किया है। वेश्या समस्या एक सामाजिक बुराई के रूप में यहाँ प्रकट हो जाती है।

आर्थिक विवशता :

मनुष्य जीवन का संचालन अर्थ करता है अर्थ ही मनुष्य मनुष्य में संघर्ष निर्माण करता है। और संघर्ष मिटाने का काम भी करता है। इसी पर पूरी दूनिया निर्भर करती है। अगर मनुष्य का जीवन सामाजिक ढाँचे में ढला हुआ है तो सामाजिक ढ़ाँचा आर्थिक ढ़ाँचे पर आधारित है। इसी वजह से पैसों के बिना सामाजिक जीवन अधूरा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाने पर रिश्तेदार भी एक दूसरे से कन्नी काटकर चलते दिखाई देते हैं।

कमलेश्वर ने अपनी कुछ नायिकाओं के माध्यम से आर्थिक विवशता और उसके परिणामों का अंकन किया है। कमलेश्वर के `एक सड़क सत्तावन गलियाँ' की नायिका आर्थिक विवशता की समस्या से ग्रस्त है। वह पैसों के अभाव में नौटंकी में काम करने लगती है। वही वह नखरे दिखाना भी सीख जाती है। लेकिन उसका यह जीवन अत्यंत पीड़ादायी है। वह सरनाम को बताती है -``पौडर-लाली लगाकर पटरों पर कुदते-कुदते हाड टूट जाते हैं, नगाडों से कान के पर्दे फट जाते हैं ------पर लैला बन के रहूँगी एक दिन।''[7]

यहाँ उसकी आर्थिक विवशता स्पष्ट हो जाती है। चाहे कितनी भी कठिनाई हो, वह ये काम करती है क्योंकि उसे पेट पालना है।

`डाक बंगला' की नायिका इरा तो पूरे उपन्यास में इसी समस्या से ग्रस्त हैं। वह विमल से भागकर शादी करती है। अर्थाभाव के कारण नौकरी करने लगती है। शक कर विमल उसे त्याग देता है तो पेट पालने के लिए जिसके पास नौकरी करती है उसी बतरा को समर्पित हो जाती है। नौकरी से निकाले जाने के कारण अर्थाभाव सामने आने लगता है तो अधेड़ उम्र के डॉक्टर चंद्रमोहन से शादी करती है। अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए वह कभी झुठ भी बोलती है। कहीं-न-कहीं स्त्री को फँसाने के लिए हर कोई तैयार है इसलिए तो इरा सोचती है कि इस कमीनी दूनिया में औरत पुरूष के बिना नहीं रह सकती उसे एक कवच की जरूरत होती है चाहे बाप, चाहे पति, चाहे भाई, कोई झुठा रिश्तेदार। वह सोचती है कि जिस प्रकार पहनने के लिए साडी चाहिए वैसे इस तरह का एक कवच भी चाहिए। पेट को पालने के लिए अर्थाभाव के कारण वह कई पुरूषों के

संपर्क में आ जाती है फिर भी वह अकेली ही रहती है।

कमलेश्वर के 'आगामी अतीत' की नायिका चाँदनी है जो चाँदनी की माँ को फँसानेवाले कमल बोस की बेटी है। पागलखाने में बलात्कार के कारण चाँदनी वेश्या जीवन बिताने पर मजबुर हो जाती है। वेश्या जीवन में पैसों का जितना महत्व है उतना अन्य किसी रिश्ते में नहीं। वह किसी ग्राहक से आसानी से जेब गरम करके आने के लिए कहकर उसे निकाल देती है। वह तीन सौ रूपये के लिए कमल बोस के साथ महिनाभर रहने चली जाती है। अर्थात् आर्थिक स्थिती से मजबूर होकर वह कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाती है।

इस प्रकार हम यह देखते है कि कमलेश्वरने पैसों के अभाव में होनेवाली दर्दनाक स्थिति का वर्णन किया है। उसी के कारण बंसिरी और चाँदनी वेश्या जीवन जीती है और इरा को पुरूष बदलते रहना पड़ता है। केवल अर्थाभाव या आर्थिक विवशता मनुष्य का जीवन कितना दूखी बना देती है इस बात को कमलेश्वरजी ने दिखाया है।

इस प्रकार कमलेश्वरजी ने नायिकाओं के जीवन में आनेवाली कई समस्याओं को प्रस्तुत कर उनके समाधान को प्रस्तुत करने का सफलतापूर्वक प्रयास किया है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है कि चाहे कमलेश्वरजी को एक सफल कहानीकार के नाते जाना जाता है चाहे उनके उपन्यासों पर कहानियों को लंबा कर देने का आक्षेप लगाया जाये, चाहे उनके उपन्यासों पर आक्षेप लगाये जाये कि उनके उपन्यास सिर्फ फिल्माये जाने के लिए ही लिखे गये हैं फिर भी नायिकाओं की समस्याओं का अत्यंत सफलतापूर्वक चित्रण कमलेश्वर ने किया है। उनके उपन्यासों में परिवार विघटन, अनमेल विवाह, असफल प्रेम, अकेलापन, बुजुर्गों की उपेक्षा, झुठी प्रतिष्ठा की समस्या, नैतिक मुल्यों का पतन, कुँआरी माता समस्या, वेश्या समस्या, पुरूष की वासना का शिकार नारी, आर्थिक विवशता की समस्या आदि समस्याओं का अत्यंत यथार्थ चित्रण कमलेश्वर ने किया है। इन समस्याओं में प्रमुखतम रूप से पारिवारिक समस्याएँ दिखाई देती हैं, सामाजिक समस्याएँ बहुत कम है। इस आधारपर हम यह कह सकते हैं कि पारिवारिक समस्या चित्रण में कमलेश्वर ने सफलता पायी है।

संदर्भ [redacted] सूची

1. प्रभा वर्मा - ``हिंदी उपन्यास : सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप`` पृष्ठ 245

2. डा. एच.जी. साळुंखे - ``हिंदी के मार्क्सवादी उपन्यासों की नायिकाएँ`` पृष्ठ 245

3. डा. कुसुम अंसल - ``आधुनिक हिंदी उपन्यासों में महानगर`` पृष्ठ 128

4. डा. एच.जी. साळुंखे - ``हिंदी के मार्क्सवादी उपन्यासों की नायिकाएँ`` पृष्ठ 240

5. कमलेश्वर - ``आगामी अतीत`` पृष्ठ 102

6. डा. एच. जी. साळुंखे - ``हिंदी के मार्क्सवादी उपन्यासों की नायिकाएँ`` पृष्ठ 248

7. कमलेश्वर - ``एक सड़क सत्तावन गलियाँ`` पृष्ठ 40